अल्पसंख्यक

मैं पाकिस्तान में सताया गया हिंदू हूँ
मैं हिंदुस्तान में दबाया गया मुस्लिम हूँ
मैं इज़रायल का मारा फिलिस्तीनी हूँ
मैं जर्मनी में कत्ल हुआ यहूदी हूँ
मैं इराक का जलाया हुआ कुवैती हूँ
मैं चीन द्वारा कुचला गया तिब्बती हूँ
मैं अमेरिका में घुटता हुआ ब्लैक हूँ
मैं आइसिस से प्रताड़ित यज़ीदी हूँ

मैं अशोक से हारा कलिंगी हूँ
मैं रशिया से त्रस्त सीरियन हूँ, पॉलिश हूँ, हंगेरियन हूँ, यूक्रेनी हूँ
मैं अकबर से परास्त मेवाड़ी हूँ
मैं ब्रिटेन के हाथों लुटा एशियाई हूँ, अफ़्रीकी हूँ, ऑस्ट्रेलियाई हूँ, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकी हूँ

मैं अमेरिका के हथियारों से तबाह किया गया इराकी हूँ, वियतनामी हूँ, लीबियन हूँ, अफ़ग़ानिस्तानी हूँ, लगभग 70 नागरिकताओं की जलती हुई कहानी हूँ

मैं म्यांमार से भगाया गया रोहिंग्या हूँ
मैं श्रीलंका से मिटाया गया तमिल हूँ
मैं चौरासी का सिख हूँ
मैं भारत के जंगलों से उजाड़ा गया आदिवासी हूँ
मैं अपनी धरती पर कैद कश्मीरी हूँ
मैं कश्मीर से बेघर किया गया कश्मीरी पंडित हूँ
मैं असम का बंगाली हूँ
मैं खुद के देश में रंगभेद झेलता पूर्वोत्तर का वासी हूँ

मैं पितृसत्ता से जान बचाती हुई लड़की हूँ
मैं परिवार से निकाला हुआ समलैंगिक हूँ
मैं शोर में दबाया गया सवाल हूँ
मैं वेदों से बहिष्कृत एक जाति हूँ
मैं सामाजिक सम्मान के लिए मारा गया प्रेमी हूँ
मैं धर्माधों से धमकाया गया नास्तिक हूँ
मैं भीड़ से बाहर धकेली गयी चेतना हूँ
मैं तर्कहीनों से सहमा हुआ तर्कवादी हूँ

मैं कभी किसी गाँव का, कभी किसी राज्य का, कभी किसी देश का, कभी किसी समाज का, कभी किसी संस्था का, तो कभी पूरी दुनिया का अल्पसंख्यक हूँ
मैं बहुसंख्यकों को दिखाया गया खतरा हूँ
मैं लुटेरी सत्ता का सबसे आसान मोहरा हूँ
और मैं जानता हूँ कि ये दोनों हँसेंगे अगर मैं खुद को निर्दोष कहूँगा
तो फिर मेरी धरती कौनसी है
मेरा देश किधर है
मेरा घर कहाँ है
क्या मैं इस पृथ्वी पर हमेशा खानाबदोश रहूँगा ?

– साइबर नजर

यह सप्ताह / जुबान से निकले शब्द

कोलंबा कालीधर

एक सहेली ने दूसरी सहेली से पूछा : बच्चा पैदा होने की खुशी में तुम्हारे पति ने तुम्हें क्या तोहफा दिया ?

सहेली ने कहा – कुछ भी नहीं!

उसने सवाल करते हुए पूछा कि क्या ये अच्छी बात है ? क्या उस की नज़र में तुम्हारी कोई कीमत नहीं ?

लफ्ज़ों का ये ज़हरीला बम गिरा कर वह सहेली दूसरी सहेली को अपनी फिक्र में छोड़कर चलती बनी। थोड़ी देर बाद शाम के वक्त उसका पति घर आया और पत्नी का मुंह लटका हुआ पाया। फिर दोनों में झगड़ा हुआ। एक दूसरे को लानतें भेजी। मारपीट हुई, और आखिर पति पत्नी में तलाक हो गया।

जानते हैं प्रॉब्लम की शुरुआत कहां से हुई ? उस फिजूल जुमले से जो उसका हालचाल जानने आई सहेली ने कहा था।

रवि ने अपने जिगरी दोस्त पवन से पूछा– तुम कहां काम करते हो?

पवन– फला दुकान में।। रवि– कितनी तनख्वाह देता है मालिक?

पवन–18 हजार।।

रवि–18000 रुपये बस, तुम्हारी जिंदगी कैसे कटती है इतने पैसों में ?

पवन (गहरी सांस खींचते हुए)– बस यार क्या बताऊं।।

मीटिंग खत्म हुई, कुछ दिनों के बाद पवन अब अपने काम से बेरूखा हो गया।। और तनख्वाह बढ़ाने की डिमांड कर दी।। जिसे मालिक ने रद्द कर दिया।। पवन ने जॉब छोड़ दी और बेरोजगार हो गया।। पहले उसके पास काम था अब काम नहीं रहा।।

एक साहब ने एक शख्स से कहा जो अपने बेटे से अलग रहता था।। तुम्हारा बेटा तुमसे बहुत कम मिलने आता है।। क्या उसे तुमसे मोहब्बत नहीं रही? बाप ने कहा बेटा ज्यादा व्यस्त रहता है, उसका काम का शेड्यूल बहुत सख्त है।। उसके बीवी बच्चे हैं, उसे बहुत कम वक्त मिलता है।।

पहला आदमी बोला– वाह!! यह क्या बात हुई, तुमने उसे पाला–पोसा उसकी हर ख्वाहिश पूरी की, अब उसको बुढ़ापे में व्यस्तता की वजह से मिलने का वक्त नहीं मिलता है।। तो यह ना मिलने का बहाना है। इस बातचीत के बाद बाप के दिल में बेटे के प्रति शंका पैदा हो गई।। बेटा जब भी मिलने आता वो ये ही सोचता रहता कि उसके पास सबके लिए वक्त है सिवाय मेरे।।

याद रखिए जुबान से निकले शब्द दूसरे पर बड़ा गहरा असर डाल देते हैं।। बेशक कुछ लोगों की जुबानों से शैतानी बोल निकलते हैं।। हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बहुत से सवाल हमें बहुत मासूम लगते हैं।। जैसे–

तुमने यह क्यों नहीं खरीदा।।

तुम्हारे पास यह क्यों नहीं है।।

तुम इस शख्स के साथ पूरी जिंदगी कैसे चल सकती हो।।

तुम उसे कैसे मान सकते हो।। वगैरा वगैरा।।

इस तरह के बेमतलबी फिजूल के सवाल नादानी में या बिना मकसद के हम पूछ बैठते हैं।। जबकि हम यह भूल जाते हैं कि हमारे ये सवाल सुनने वाले के दिल में नफरत या मोहब्बत का कौन सा बीज बो रहे हैं।।

आज के दौर में हमारे इर्द-गिर्द, समाज या घरों में जो टेंशन टाइट होती जा रही है, उनकी जड़ तक जाया जाए तो अक्सर उसके पीछे किसी और का हाथ होता है।। वो ये नहीं जानते कि नादानी में या जानबूझकर बोले जाने वाले जुमले किसी की ज़िंदगी को तबाह कर सकते हैं।।

ऐसी हवा फैलाने वाले हम ना बनें।। लोगों के घरों में अंधे बनकर जाओ और वहां से गूंगे बनकर निकलो।।

लाल कपड़े का धोखा

कचहरी परिसर में अचानक एक बड़ा गेहूँवन सर्प निकल आया। परिसर का बड़ा मैदान और वैसा ही बड़ा सर्प. फन काढ़कर बैठने पर तकरीबन चार फुट की उंचाई.. लम्बाई आठ, नौ फुट में जौ भर भी कम न रही होगी. मिनटों में दर्शकों की एक परिधि तैयार हो गई, सैकड़ों तमाशाबीन और एक विशाल सर्प. सर्प मैदान में राह ढूंढ़ रहा था और दर्शक उसकी विशालकाय छवि को देखकर हैरान. किसी की हिम्मत न थी आगे बढ़ने की.. कोई एक भी कदम आगे बढ़ाने को तैयार न था। उधर सर्प बराबर चारों दिशाओं में फन घुमाकर अपनी सुरक्षा में मुश्तैद था.उसे हर एक व्यक्ति से खतरा और भय लग रहा था।

तभी भीड़ को चीरते हुये एक शख्स सर्प की तरफ बढ़ा.. सर्प और चौकन्ना हो गया. आदमी शातिर और फुर्तीला था. उसने अपने बायें हाथ से एक लाल रंग का रुमाल निकाला और दाहिने में एक छोटा सा डंडा/सोटा छिपाकर रखा था। उस व्यक्ति ने अपने बायें हाथ रखी रूमाल को सर्प की तरफ लपकाया.. सर्प, रुमाल को ही हमला मानकर अपनी पूरी ऊर्जा और क्रोध से रुमाल पर झपटा.. लेकिन यह क्या ? रुमाल तो धोखा निकला असली बार तो उसके डंडे से सर्प की गरदन पर किया गया.. सर्प का मेरुदण्ड सेकेंड के भीतर खण्डित हो चुका था और सर्प अपनी ऊंचाई गंवाकर जमीन पर घिसटने लगा.. बीस मिनट के भीतर वही चमकीला, रोबीला और विषधर सर्प, डंडे में लटकाकर कचहरी में घुमाया गया.गजब तो यह था कि उन लोगों ने भी उसे छुआ और उसका मजाक बनाया जो उसके पचास मीटर की दूरी होने पर भी कांप रहे थे।

मित्रों! राजनीति में ऐसी घटनाएँ आम हैं. जनता से भयभीत होने के बावजूद..उन्हें लाल कपड़ा दिखाकर, भ्रमित किया जाता है और जनता अपनी पूरी ऊर्जा, क्रोध एवं शक्ति, लाल रुमाल पर गंवाकर अपनी मेरुदंड गवां बैठती है।

भाई जिसे चुनकर.. आप अपनी पूरी ऊर्जा, क्रोध और शक्ति लगाने को तैयार हैं दरअसल वो एक लाल रुमाल है असली वार तो दाहिने हाथ से किया जायेगा.. लेकिन तब तक इतनी देर हो चुकी होगी कि आप डंडे पर लटक कर सिर्फ तमाशा बनकर रह जायेंगे।

फुंफकारते रहिए, चारो ओर देखते रहिए.... फन नचाते रहिए लेकिन इतना ध्यान रहे कि कोई रुमाल दिखाकर अपने दाहिने हाथ से डंडा न चला दे॥

– रिवेश प्रताप सिंह

FASHION.IN

Available all types of ladies cotton kurties, Fancy Kurties, Jegin, legin, Fancy Top, T-Shirts, Trousers and imported material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

एकाग्रता की शक्ति

एकाग्रता की मनुष्य जीवन में बहुत महत्ता है। ध्यान केन्द्रित करके ही हम कठिन से कठिन कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आज के युग में हर व्यक्ति की प्रथम चाह होती है, थोड़े से समय में सफलता पाना। सफलता पाना इतना सरल और सहज नहीं है। इसके लिए अनेक प्रयास करने पड़ते हैं तथा कुछ आवश्यक बातों पर ध्यान भी देना पड़ता है। सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह कार्य हमने कितनी कुशलता से किया है। कार्य में कुशलता भी तभी आती है जब हम मन को शांत कर एकाग्र होकर कार्य करें। एकाग्रता के बिना हमारा मन इधर-उधर भटकता है और अस्थिर मन से किया गया कार्य सदैव असफल होता है।

यह सत्य है कि मानव मन बहुत चंचल होता है इसी वजह से अक्सर हम बहुत देर तक किसी कार्य में अपनी रुचि नहीं दिखा पाते और अशांत होकर कार्य से विचलित होते हैं या छोड़ देते हैं। शांत मन से ध्यान मग्न होकर किया गया कार्य ही वास्तव में सफल होता है। जिसमें कोई कमी नहीं होती है। प्राचीन काल में हमारे देश के अनेक ऋषि मुनियों ने इसी आधार पर अनेक कठिन सिद्धियाँ भी प्राप्त कीं, साथ ही इन्हीं सिद्धियों से उन्होंने समाज के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य भी किए। आधुनिक समय में भी एकाग्रता अनेक प्रकार की अविष्कारों में सहायक हुई है। बड़े-बड़े गणितज्ञ व वैज्ञानिक सभी अपने कार्य में सिद्धि पाने के लिए ध्यान केन्द्रित होकर ही कार्य करते हैं। वे मन को भटकने से रोकने के लिए स्वाध्याय करते हैं, एकाग्रता हमें भटकने से भी रोकती है। मन को शांत रखती है, बुद्धि का विकास भी करती है।

आज के युवा अस्थिर मन के कारण भटक जाते हैं और अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाते हैं इसलिए छात्रों को विशेषकर एकाग्र मन से विद्या अर्जन करनी चाहिए। मन को एकाग्र करने के लिए स्वाध्याय करें, योग का अभ्यास करें, ध्यान केन्द्रित कर कठिन विषयों पर गहन अध्ययन करना चाहिए। एकाग्रता से ही मनुष्य को सफलता मिलती है।